निष्कर्ष एवं सुझाव:

आज बाजार प्रतिस्पर्धा के दौर में लगभग सभी अख़बारों ने विस्तारवादी नीति को अपना लिया है। इसके पीछे कारण यह है कि बाजार में विस्तार से ही पहचान स्थापित हो रही है जिसका आर्थिक लाभ भी विज्ञापन के रूप में मिल रहा है। दैनिक भास्कर ने भी इसी नीति पर आगे बढ़ते हुए बिहार में पूंजी निवेश किया है। बड़े पैमाने पर मांग से ज्यादा अख़बार की कॉपी प्रिंट की जा रही है जो कि बाजार रणनीति का ही एक हिस्सा है। शुरूआती दौर में कई अखबार सामान्य तरीके से बाजार में प्रवेश करते हैं। दैनिक भास्कर ठीक इसके उलट आक्रामक ढंग से विज्ञापन करता हुआ बिहार के मीडिया बाजार में अपने कदम रखता है। दैनिक भास्कर की मार्केट रिसर्च टीम को सारा श्रेय जाता है जो बाजार का बहुत ही गहन अध्ययन करता है। जिससे कि अखबार को स्थापित होने बहुत ही कम समय लगता है।

बिहार से प्रकाशित लगभग सभी अख़बारों ने अपने तकनीकी पक्ष पर उतना ध्यान नहीं दिया जितना की दैनिक भास्कर ने अपने शुरुआती दौर में ही दिया है। साथ ही कम कीमतों और रंगीन पेज के वजह से पाठकों का ध्यान अपने तरफ आकृष्ट किया है। बिहार में पाठकों की राय के हिसाब से देखे तो दैनिक भास्कर के आगे लगभग सभी अख़बारों के प्रति पाठकों की रूचि कम हो रही है। अगर वहीं दूसरी तरफ अख़बार के तथ्यों की बात करें तो दैनिक भास्कर ने प्रांतीय और क्षेत्रीय ख़बरों को प्राथमिकता से छाप रहा है जिससे आम पाठक जल्दी जुड़ गया है।

शोधार्थी के द्वारा शोध विषय "बिहार में दैनिक भास्कर की उपस्थिति" में शोध उपकरण के रूप में प्रश्नावली, अन्तर्वस्तु विश्लेषण और द्वितीयक आंकड़े का उपयोग किया गया है। शोधार्थी इन उपकरणों के प्रयोग एवं परीक्षण के बाद निम्नलिखित निष्कर्ष पर पहुंचा है।

- दैनिक भास्कर बिहार में लगातार अपना विस्तार करता जा रहा है। बिहार में इसके पांच मुख्य संस्करण एवं 10 जिला संस्करण छपते हैं। वर्तमान में कुल 5 लाख प्रतियां दैनिक भास्कर बिहार में छाप रहा है।
- पाठकों की राय में दैनिक भास्कर बिहार के अन्य अखबारों की तरह पाठक और पत्रकारिता की सेवा में लगा है। ज्यादातर पाठक यह मानते है कि दैनिक भास्कर सत्ता और शासन की खबरों को निष्पक्षता से प्रकाशित करता है।

- दैनिक भास्कर के विज्ञापन के स्लोगन अगर आप देखते हैं तो आपको लगेगा कि यह अखबार बिहार में पाठकों के लिए एक नयी पत्रकारिता का आगाज करने वाला है जबकि उस समय बिहार में सरकारी विज्ञापनों पर होने वाले खर्च में 5 वर्षों में चार गुणा वृद्धि हुई थी। बिहार सरकार ने 2001-2007 के मध्य लगभग 22 करोड़ खर्च किये जबकि 2007-12 के मध्य यह खर्च बढ़कर लगभग 141 करोड़ हो गया था।
- दैनिक भास्कर स्थानीयता एवं क्षेत्रीयता की अवधारणा पर कार्य करता है। बड़ी-बड़ी कॉरपोरेट कंपनियाँ अपने उपभोक्ता उत्पादों को लेकर छह लाख 78 हज़ार गाँवों को अपना निशाना बना रही है। ऐसे में अख़बार को गाँव तक पहुँचने से कौन रोक सकता है। आखिरकर अखबार भी इसी कॉरपोरेट का ही एक उपक्रम है।
- 'हेडलाइंस फ्रॉम हिंदी हार्टलैंड' पुस्तक में लेखिका शैवंती नाइनन का कहना है कि हिंदी अख़बारों ने राष्ट्रीय मिथक को तोड़कर समाचारों को बेहद स्थानीय बना दिया है। दैनिक भास्कर द्वारा स्थानीय खबरों की प्रमुखता और पाठकों की रूचि खबरों की क्षेत्रीयता के सिद्धांत को स्थापित करती है।
- दैनिक भास्कर जनसरोकार से जुड़े स्थानीय संघर्ष की खबरों को अपने अखबार में जगह देता है। प्रश्नावली में इससे संबंधित सवाल के जवाब में 46 प्रतिशत लोग मानते हैं कि दैनिक भास्कर ऐसे खबरों को अखबार में जगह देता है जबकि 52 प्रतिशत लोग मानते हैं कि कभी-कभी दैनिक भास्कर के अखबार ऐसी खबरों को जगह मिलती है।
- दैनिक भास्कर अपनी खबरों में समाज के सभी वर्गों को स्थान देता है। प्रश्नावली में पूछे गये संबंधित प्रश्न के उत्तर में 69 प्रतिशत लोगों ने माना कि दैनिक भास्कर अपनी खबरों में समाज के सभी वर्ग को समान स्थान देता है।
- दैनिक भास्कर की खबरों के अंतर्वस्तु विश्लेषण से ज्ञात होता है कि "मंडे नो निगेटिव" में दो से तीन खबरें प्रकाशित की जाती हैं। इन खबरों की प्रकृति की अन्य अकबारों प्रकाशित सॉफ्ट स्टोरी के समान ही है।

- दैनिक भास्कर ने बहुत कम समय में अपनी स्थिति मजबूत कर ली है। बिहार के तीन बड़े अखबार दैनिक जागरण, दैनिक हिन्दुस्तान और प्रभात खबर के समकक्ष आज दैनिक भास्कर खड़ा है। दैनिक भास्कर ने बिहार में तीनों अखबार के पाठकों को अपनी तरफ आकर्षित किया है। उत्तरदाताओं में से 53 प्रतिशत हिन्दुस्तान समाचार पत्र के पूर्व पाठक थे जबकि 30 प्रतिशत पहले दैनिक जागरण अखबार पढ़ते थे। प्रभात खबर अखबार पढ़ने वाले 13 प्रतिशत पाठक अब दैनिक भास्कर के पाठक हैं।

दैनिक भास्कर अखबार के लिए सुझाव

- दैनिक भास्कर जिस प्रकार से स्थानीय खबरों जिस संख्या में प्रकाशित करता है उसे बनाये रखना चाहिए।
- नो निगेटिव मंडे के तहत सोमवार और ज्यादा नो निगेटिव खबरों को प्रकाशित करना चाहिए।
- विज्ञापन और समाचार के अंतराल को पृष्ठ दर पृष्ठ इस प्रकार संयोजित करना चाहिए कि पाठकों को रूचि अखबार के प्रति और बढ़े।
- बिहार के विकास के दूसरी जगहों की सफल केस स्टडी का प्रकाशन कर सत्ता और जनता सजग बनाने का प्रयास करना चाहिए।

विषय संबंधी शोध को आगे ले जाने वाले शोधार्थी के लिए सुझाव

प्रस्तुत शोध में सिर्फ पटना संस्करण को आधार बनाया गया है। नये शोधार्थी दैनिक भास्कर के अन्य संस्करण को आधार बनाकर शोध कार्य को आगे ले जा सकते हैं।

- शोध विषय में प्रश्नावली को शोध का मुख्य उपकरण रखा गया है। नये शोधार्थी अखबार का अन्तर्वस्तु विश्लेषण को इसका मुख्य उपकरण बनाकर शोध को आगे ले जा सकते हैं।
- नये शोधार्थी दैनिक भास्कर बिहार के एक साथ दो संस्करण को लेकर भी शोध कार्य आगे बढ़ा सकते हैं।
- शोध कार्य को आगे बढ़ाने के लिए पटना संस्करण को दो अलग- अगल अखबार का भी अध्ययन किया जा सकता है।